ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इन्द्रो विश्वस्य राजति।
सामवेद 456
परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सारे विश्व का शासक और संचालक है।
The Bounteous Lord is the monarch and the motivation of the whole world.

वर्ष 40, अंक 1 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 31 अक्टूबर, 2016 से रविवार 6 नवम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल : 20-21-22 अक्तूबर, 2016 सम्पन्न

वैदिक संस्कृति को आदर्श में लाने से समाज में व्याप्त कुसंस्कार, विसंगतियां, छुआछूत जातीय भेदभाव समाप्त हो जाते हैं – विद्यादेवी भंडारी, राष्ट्रपति नेपाल

आर्य समाज की ताकत का अंदाजा नेपाल सम्मेलन देखकर लगाया जा सकता है – स्वामी सुमेधानन्द

नेपाल में आर्यसमाज मे प्रचारार्थ हर सम्भव सहयोग करेंगे – डॉ. सत्यपाल सिंह

स्वामी दयानन्द सरस्वती न होते तो देश आजाद न हुआ होता – योगी आदित्यनाथ

आर्यों के सहयोग से काठमांडू में होगी आर्य समाज मन्दिर की स्थापना

नेपाल में पुन: वैदिक धर्म की स्थापना हेतु मील का पत्थर साबित होगा यह आर्य महासम्मेलन – महाशय धर्मपाल

सम्मेलन में आई हुई आर्य जनता की संख्या दिया नेपाल में भविष्य के आर्यसमाज का संकेत – सुरेशचन्द्र आर्य

आर्यसमाज की उन्नति के लिए नेपाल के सभी वर्गों को एक साथ जोड़कर कार्य करना होगा – धर्मपाल आर्य

आर्यसमाज के विस्तार के लिए वैदिक धर्म के प्रचार कार्यों में निरन्तरता आवश्यक – प्रकाश आर्य

20, 21, 22 अक्तूबर अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल, अपने आप में एक सफल से भी बढ़कर सफलतम सम्मेलन कहा जाना चाहिए। देश-विदेश से आये हजारों की संख्या में आर्यों द्वारा एक महान वैदिक उदघोष। आर्यों की भूमि पर आर्यों द्वारा यह प्रयास नेपाल के धार्मिक, सामाजिक जीवन में नया रंग भरता नजर बुद्धिजीवी, समाज के चिंतकों, लेखकों, विचारकों व सनातन वैदिक धर्म के रक्षकों को टुंडीखेल मैदान में खींच लाया। महासम्मलेन के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री सुरेशचंद्र अग्रवाल द्वारा व मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल की राष्ट्रपति श्रीमती विद्या देवी भंडारी व महाशय धर्मपाल जी रहे। यह महासम्मेलन अपनी जवानी को इस देश और समाज के पुनर्जागरण के लिए खोए स्वाभिमान की पुन: प्राप्ति के लिए लुटा दिया था। स्वामी जी के *कृण्वन्तो विश्वार्यम* के आन्दोलन को आगे बढ़ाते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने नेपाल की राजधानी काठमांडू में इस वर्ष इसका बिगुल बजाया। देश विदेश से हजारों की संख्या में आये गुजरी। लहराती वैदिक पताका ऊँचे स्वरों में लगते वैदिक उद्घोष का नजारा लोगों को रूककर देखने को विवश कर रहा था। शोभा यात्रा के बाद यज्ञ का कार्य शुरू किया गया। आचार्य संजीवनी जी एवं पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की ब्रह्मचारिणी किरण, स्नेहा, मोना, धृति व वैष्णवी के मुखारविंद से गुंजायमान

आया। राजधानी काठमांडू के टुंडीखेल मैदान से उठा वैदिक धर्म की जय का उद्घोष नेपाल के समाचार पत्रों की पहले पन्ने की ऐसी सुर्खियाँ बनी जो नेपाल के आर्य समाज के लिए गौरव के क्षण के साथ उसके आदर्शो के ऊँचे आयाम स्थापित करता नजर आया। आनन्द कन्द आदित्य ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द जिन्होंने आर्यो से नेपाल की राजधानी ओ३म ध्वज के रंग में रंगी नजर आई।

सुबह 7 बजे भव्य शोभा यात्रा राजधानी काठमांडू की सड़कों से होकर वैदिक मंत्रों से वातावरण धर्म-आस्था में समाहित हो गया। महाशय धर्मपाल जी द्वारा ध्वजारोहण करने के बाद पूरा मैदान

– शेष समाचार एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 4-5-6 एवं 8 पर

10 हजार आर्यजनों ने बनाया महासम्मेलन को भव्य एवं ऐतिहासिक : 11 देशों की रही भागीदारी

वेद-स्वाध्याय

उस पर श्रद्धा करो

यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विजइवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः।। -ऋ. 2/12/5
ऋषिः गृत्समदः।। देवताः इन्द्रः।। छन्दः त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ- यम्=जिस **घोरम्**=अद्भूत, भयङ्कर वस्तु के विषय में **पृच्छन्ति स्म**=लोग प्रश्न किया करते हैं कि **कुहः सः इति** ='वह कहाँ है' **उत इ एनम्**=और जिस इसके विषय में **आहुः**=बहुत-से कहा करते हैं कि **न एषः अस्ति इति**='वह है ही नहीं'' **सः**=वही **अर्यः**=अरि के, विपरीतगामी स्वार्थी पुरुष के **पुष्टीः**=सब सांसारिक समृद्धि, पुष्टि को **विजः इव**=भूकम्प की भाँति **आमिनाति**=विनष्ट कर देता है। **जनासः**=हे मनुष्यो! **अस्मै श्रत् धत्त**=इस परमेश्वर पर श्रद्धा करो **सः इन्द्रः**=वही परमैश्वर्यवान् परमेश्वर है।

विनय- मनुष्य जब गम्भीरतापूर्वक उस परमेश्वर की सत्ता पर विचार करने लगते हैं तो उनमें से कोई पूछते हैं 'वह ईश्वर कहाँ है' जिसने इस बड़े भोगदायक संसार में दुःख, दर्द, मृत्यु आदि पैदा करके लोगों का रसभङ्ग कर रखा है, जो बड़े-बड़े दुष्टों का दलन करनेवाला तथा अपने वज्र से पापों का संहार करनेवाला कहा जाता है, उस घोर भयङ्कर ईश्वर के विषय में वे पूछते हैं कि 'वह कहाँ है?' 'हमें बताओ वह कहाँ है?' दूसरे कुछ भाई निश्चय ही कर लेते हैं कि 'ईश्वर-वीश्वर कोई नहीं है।' 'बीसवीं शताब्दी में ईश्वर तो अब मर गया है'-'ईश्वर केवल अज्ञानियों के लिए है', परन्तु हे मनुष्यो! तनिक सावधानी से देखो! सत्य को खोजो और इसे धारण करो। देखो! वे पुरुष जो अपनी समझ में प्रकृतिमय ईश्वरविहीन संसार में रहते हैं, अतः जो इस जगत् में जिस किसी प्रकार सुखभोग करना ही अपना ध्येय समझते हैं और स्वभावतः विपरीतगामी होकर धर्म, दया आदि के सत्यमार्ग को तिरस्कृत कर निरन्तर अपनी पुष्टि की ही धुन में लगे रहते हैं अर्थात् धनसंग्रह, स्त्री, पुत्र, प्रतिष्ठा, प्रभाव आदि से अपने को समृद्ध और पुष्ट करते जाते हैं, उन 'अरि' नामक स्वार्थी लोगों के सामने भी एक समय आता है जबकि उनका यह सांसारिक भोग का खड़ा किया हुआ सब महल एकदम न जाने कैसे गिर पड़ता है। उनके जीवन में एक भूकम्प-सा आता है, उन्हें एक प्रबल धक्का लगता है। उनकी वह सब भौतिक-तुष्टि क्षण में मिट्टी हो जाती है, सब ठाठ गिर पड़ता है। उस समय बहुत बार उनका अभिमान नष्ट होता है और वे नम्र होते हैं। कल्याणकारी है वह धक्का, कल्याणकारी है उनका वह सर्वनाश, यदि वह उन्हें नम्र बनाता है और धन्य हैं वे पुरुष जिन्हें यह कल्याणकारी धक्का लगता है, क्योंकि वहीं पर प्रभु के दर्शन हो जाया करते हैं। हे मनुष्यों! वह ईश्वर आँख से दीखने की वस्तु नहीं है, उसे तो श्रद्धा की आँख से देखो। जो मनुष्यों की बड़ी-बड़ी योजनाओं को पलक झपकने में बदल देता है, कुछ-का-कुछ कर देता है; जिसके आगे अल्पज्ञ मनुष्य का कुछ बस नहीं चलता, तनिक उसे देखो, नम्र होकर उसे देखो; वही परमेश्वर है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

इसाई मिशनरी के जाल में नेपाल

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन काठमांडू के मंच से नेपाल में बड़ी संख्या में हो रहे धर्मान्तरण के खिलाफ आवाज उठाई गयी। नेपाल के भी कई सामाजिक चिंतकों ने भी इस गंभीर मामले पर अपनी चिंता व्यक्त की। वाग्मती विद्यालय के संचालक रामप्रसाद विद्यालंकार ने अपनी राय रखते हुए कहा कि नेपाल की असली पहचान उसका हिन्दू राष्ट्र होना था न कि धर्मनिरपेक्ष देश। बाहरी मुल्कों से आये धन के कारण हमारे देश के नेता तो जीत गये किन्तु नेपाल हार गया। भारत और नेपाल दो पड़ोसी देश है। दोनों की सभ्यता, संस्कृति, भाषा और धर्म एक सा होने के साथ-साथ समस्याएं भी समान हैं। जहाँ 21 वीं सदी में भारत आर्थिक तरक्की के साथ धर्मान्तरण से जूझ रहा है वहीं नेपाल भी इस बीमारी से अछूता नहीं रहा बल्कि कहा जाये तो भारत से भी बड़े पैमाने पर यहाँ धर्मान्तरण का खेल जारी है। नेपाल में कुछ समय पहले जारी हुए धर्मवार आंकड़े चौंकाने वाले थे। 1990 के दशक में नेपाल में इसाइयों की आबादी 0.02 फीसदी यानी मात्र 20 हजार बताई गई थी, वहीं अब इन वर्षो में यह आबादी बढ़ कर 7 फीसदी यानी 21 लाख से अधिक हो गई है। पिछले 20 सालों में नेपाल में इसाई मिशनरियों का जाल बहुत तेजी से फैला है। यह बीमारी नेपाल के तमाम अंचलों में तेजी से फैल गई है। नेपाल के बुटवल में कई चर्च बन चुके हैं। इसके अलावा नारायण घाट से बीरगंज के बीच कोपवा, मोतीपुर, आदि में हजारों लोगों ने इसाई धर्म स्वीकर कर छोटे-छोटे चर्च स्थापित कर लिए हैं। जो अपना धार्मिक कारोबार इतना तेजी से विकसित कर रहे हैं कि आने वाले समय में नेपाल तो होगा किन्तु नेपाल का नेपाल में कुछ नहीं होगा।

यदि इस बीमारी का कारण जाने तो हमें कुछ समय पहले के अतीत में झांक कर देखना होगा जून 2001 में नेपाल के राजमहल में हुए सामूहिक हत्या कांड में राजा, रानी, राजकुमार और राजकुमारियाँ मारे गए थे। उसके बाद राजगद्दी संभाली राजा के भाई ज्ञानेंद्र बीर बिक्रम शाह ने फरवरी 2005 में राजा ज्ञानेंद्र ने माओवादियों के हिंसक आंदोलन का दमन करने के लिए सत्ता अपने हाथों में ले ली और सरकार को बर्खास्त कर दिया। नेपाल में एक बार फिर जन आंदोलन शुरू हुआ और अंततः राजा को सत्ता जनता के हाथों में सौंपनी पड़ी और संसद को बहाल करना पड़ा संसद ने एक विधेयक पारित करके नेपाल को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया। 2007 में संवैधानिक संशोधन करके राजतंत्र समाप्त कर दिया गया और नेपाल को संघीय गणतंत्र बना दिया। नेपाल की एकमात्र हिंदू राष्ट्र की चमक जून 2001 के नारायणहिती नरसंहार के बाद खोने लगी थी। अप्रैल 2006 में लोगों की इच्छा के अनुसार राजा की शक्तियों को सीमित कर दिया। साल 2007 में लागू अंतरिम संविधान ने धर्मनिरपेक्षता को मूलभूत सिद्धांत के रूप में स्थापित किया। हिंदू राज्य के रूप में नेपाल के उद्भव और क्षरण को शाह राजशाही (1768-2008) के उत्थान और पतन से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

इस एक मात्र हिन्दू राष्ट्र के सेकुलर बनने के बाद यूरोप की ईसाइयत और अरब देशों को जैसे खुला शिकार मिल गया था। यह सब जान गये थे कि धार्मिक रूप से सम्पन्न नेपाल आर्थिक रूप से उतना धनी नहीं है। यहाँ अभी भी बड़ी संख्या में गरीब और अशिक्षित हैं। देवीय चमत्कार में भरोसा करना या यह कहो अंधविश्वास आदि का प्रभाव सामाजिक जीवन को बहुत गहराई तक प्रभावित करता है। नेपाल में मिशनरियों के निशाने पर वहां की गरीब और मध्यम जातियों के लोग हैं। मिशनरियां वहां के मगर, गुरुंग, लिंबू, राई, खार्की और विश्वकर्मा जातियों को अपना टार्गेट बनाती है। पहले वह उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास आदि के लिए मदद देती हैं और बाद में बड़ी खामोशी से इसाई धर्म में दीक्षित कर देती हैं। नेपाल के बदले इस जनसांख्यकीय हालात से वहां के बुद्धिजीवियों में चिंता व्याप्त है। वहां के समाज विज्ञानी रमेश गुरंग की मानें तो इसाई आबादी बढ़ने का यह सिलसिला अगर बना रहा तो आने वाले 50 सालों में वहां हिंदू और बौद्ध आबादी अल्पसंख्यक होकर रह जायेगी। ऐसे में सिर्फ एक ही सवाल पैदा होता है यदि दोबारा हिन्दुत्व यहाँ कायम हुआ तो नेपाल महात्मा गांधी के हिंदुत्व को अपनाएगा या नाथूराम गोडसे और वीर सावरकर के हिंदुत्व को स्वीकार करेगा?

नेपाल में भूकंप के बाद इन मिशनरीज को वहां सर्वाधिक लाभ मिला। सूचना और प्रशासन इस मामले में काफी सुस्त है। राजनैतिक उठापटक के कारण सरकार का ध्यान इस ओर न के बराबर है जबकि वहां की मीडिया भी राजनीति और राजनेताओं को ही प्राथमिकता दे रही है। पिछले वर्ष नेपाली संविधान सभा ने नेपाल को हिंदू राष्ट्र घोषित करने के प्रस्ताव को भारी बहुमत से ठुकरा दिया था और यह घोषित किया गया कि हिंदू बाहुल यह हिमालयी देश धर्मनिरपेक्ष बना रहेगा। लेकिन ऐसे हालात में यह प्रश्न जरूर उठेगा आखिर कब तक धर्मनिरपेक्ष बना रहेगा? पूरा इस्लाम आ जाने तक या वेटिकन के अधीन आने तक? जिस नेपाल ने कभी किसी की राजनैतिक गुलामी नहीं की, अब कहीं वह धार्मिक गुलामी करने की ओर तो नहीं जा रहा है?

-सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

वेद प्रचार की लगन ऐसी हो

आचार्य भद्रसेनजी अजमेरवाले एक निष्ठावान् आर्य विद्वान् थे। 'प्रभुभक्त दयानन्द' जैसी उत्तम कृति उनकी ऋषिभक्ति वा आस्तिक्य भाव का एक सुन्दर उदाहरण है। अजमेर के कई पौराणिक परिवार अपने यहाँ संस्कारों के अवसर पर आपको बुलाया करते थे। एक धनी पौराणिक परिवार में वे प्रायः आमन्त्रित किये जाते थे। उन्हें उस घर में चार आने दक्षिणा मिला करती थी। कुछ वर्षों के पश्चात् दक्षिणा चार से बढ़कर आठ आने कर दी गई।

एक बार उस घर में कोई संस्कार करवाकर आचार्य प्रवर लौटे तो सुपुत्रों श्री वेदरत्न, कैप्टिन देवरत्न आदि ने पूछा-क्या दक्षिणा मिली? आचार्यजी ने कहा-आठ आना।

बच्चों ने कहा-आप ऐसे घरों में जाते ही क्यों हैं? उन्हें क्या कमी है?

वैदिक धर्म का दीवाना आर्यसमाज का मूर्धन्य विद्वान् तपःपूत भद्रसेन बोला-चलो, वैदिकरीति से संस्कार हो जाता है अन्यथा वह पौराणिक पुरोहितों को बुलवालेंगे। जिन विभूतियों के हृदय में ऋषि मिशन के लिए ऐसे सुन्दर भाव थे, उन्हीं की सतत साधना से वैदिक धर्म का प्रचार हुआ है और आगे भी उन्हीं का अनुसरण करने से कुछ बनेगा।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

गढ़वाल में डोला-पालकी समस्या और आर्यसमाज

- डॉ. विवेक आर्य

गढ़वाल में सवर्णों तथा स्थानीय मुसलमान युवक-युवतियां के विवाह के अवसरों पर डोला-पालकी के उपयोग की परम्परा सदियों से रही है। बारात में डोला-पालकी उठाने का कार्य मुख्यत: शिल्पकार ही करते थे। किन्तु सवर्ण समाज ने उन्हें अपने ही पुत्र पुत्रियों के विवाह के अवसर पर डोला-पालकी के प्रयोग से वंचित कर दिया था। शिल्पकार वर वधुओं को डोला-पालकी तथा ऐसी सवारियों पर बैठने का सामजिक अधिकार नहीं दिया गया था। नियम के प्रतिकूल आचरण करने वाले शिल्पकारों को दण्डित किया जाता था।

गढ़वाल में आर्य समाज की स्थापना के प्रारम्भ में गंगादत जोशी (तहसीलदार) जोतसिंह नेगी (सेंताल्मेंट आफसर), नरेंद्र सिंह (चीफ रीडर) आदि प्रबुद्ध लोगों ने आर्य समाज के विचारों को जनता तक पहुँचाने का कार्य किया था किन्तु असंगठित और कम व्यापक होने के कारण इनके प्रयत्न सीमित क्षेत्र तक ही प्रभाव स्थापित कर सके।

यह वर्ग सवर्णों की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से भी बहुत पिछड़ा हुआ था। 20वीं शताब्दी के नवजागरण के प्रभावों से उत्पन्न चेतना के फलस्वरूप शिल्पकार नेतृत्व के रूप में जयानंद भारती का आविर्भाव हुआ। सन् 1920 के पश्चात् जयानंद भारती के नेतृत्व में शिल्पकारों की सामाजिक, आर्थिक, समस्याओं तथा उनमें व्याप्त कुरीतियों के हल के लिए संघठित प्रयास किये गए। नेता जयानंद भारती ने सवर्ण नरेंद्र सिंह तथा सुरेन्द्र सिंह के साथ मिलकर शिल्पकारों में व्याप्त कुरीतियाँ दूर करने, बच्चों को शिक्षा के लिए स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया।

कुमाऊं में लाला लाजपत राय की उपस्थिति में सन् 1913 में आर्य समाज के जन-जागरण कार्यक्रम के अन्तर्गत सवर्णों के एक वर्ग विशेष द्वारा शिल्पकारों के साथ संघर्ष की घटनाएं इस तथ्य की ओर संकेत करती हैं कि रूढिवादी व्यक्ति समाज में परिवर्तन में अवरोधक बन गए थे।

गढ़वाल में ईसाई मिशनरियों के कारण निर्बल शिल्पकार वर्ग में धर्मान्तरण की बढ़ती रुचि बढ़ना एक बड़ी चुनौती थी। फलस्वरूप आर्यसमाज द्वारा ईसाई मिशनरियों के कुचक्र को रोकने के लिए शिल्पकारों के मध्य उनके सामाजिक, आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए प्रयत्न किये गए। इन प्रयासों में 1910 में दुग्गाडा में पहला आर्य समाज स्कूल स्थापित किया गया था। तत्पश्चात् 1913 में स्वामी श्रद्धानंद द्वारा आर्य समाज का स्कूल प्रारम्भ किया गया। गढ़वाल में आर्य समाज से इन प्रारम्भिक प्रयत्नों से एक ओर जहाँ आर्य समाज के कार्य क्षेत्र में अपेक्षाकृत वृद्धि हुई वहीं दूसरी ओर शिल्पकार में शिक्षा के प्रति रुझान भी बढ़ा। इससे शिल्पकारों के ईसाईकरण के प्रयास शिथिल पड़ने लगे। शिल्पकारों में अशिक्षा कितनी थी इसका अनुमान इसी तथ्य से चलता है कि प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व तक गढ़वाल में एक भी शिल्पकार इन्ट्रेस परीक्षा उत्तीर्ण नहीं था।

.....बारात में डोला-पालकी उठाने का कार्य मुख्यत: शिल्पकार ही करते थे। किन्तु सवर्ण समाज ने उन्हें अपने ही पुत्र पुत्रियों के विवाह के अवसर पर डोला-पालकी के प्रयोग से वंचित कर दिया था। शिल्पकार वर वधुओं को डोला-पालकी तथा ऐसी सवारियों पर बैठने का सामाजिक अधिकार नहीं दिया गया था। नियम के प्रतिकूल आचरण करने वाले शिल्पकारों को दण्डित किया जाता था, यह वर्ग सवर्णों की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से भी बहुत पिछड़ा हुआ था। 20वीं शताब्दी के नवजागरण के प्रभावों से उत्पन्न चेतना के फलस्वरूप शिल्पकार नेतृत्व के रूप में जयानंद भारती का आविर्भाव हुआ। सन् 1920 के पश्चात् जयानंद भारती के नेतृत्व में शिल्पकारों की सामाजिक, आर्थिक, समस्याओं तथा उनमें व्याप्त कुरीतियों के हल के लिए संगठित प्रयास किये गए।.....

गढ़वाल में आर्य समाज को विस्तार देकर शिल्पवर्ग की सहानुभूति अपने पक्ष में करने के उद्देश्य से आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक सन् 1920 में गढ़वाल के प्रमुख नगरों कोटद्वार, दुगड्डा, लेंसिदौन, पौड़ी, श्रीनगर में भेजे गए। इनमें गुरुकुल कांगड़ी के प्रचारक नरदेव शास्त्री जी प्रमुख व्यक्ति थे। गढ़वाल में आर्य समाज के आन्दोलन के रूप में गाँवों तक पहुँचने के उद्देश्य से नगर-कस्बों के पश्चात् चेलू सैन, बीरोखाल, उदयपुर, अवाल्सुं , खाटली आदि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्य समाज की शाखाएं और विद्यालय आदि स्थापित कर ईसाई मिशनरी की चुनौती को स्वीकार किया गया।

1920 में आर्य समाज के तत्त्वावधान में अकाल राहत व शैक्षणिक कार्यकर्मों के प्रारम्भ होने के पश्चात् शिल्पकारों को सवर्णों के समान सामजिक अधिकार दिलाने के उद्देश्य से उनका जनेऊ संस्कार भी आर्यसमाज द्वारा आरम्भ किया गया। इस प्रकार सन्1924 में जयानंद भारती के नेतृत्व में डोला-पालकी बारातें संगठित की गई। इस प्रयास में कुरिखाल तथा बिंदल गाँव के शिल्पकारों की बारात ने डोला-पालकी के साथ कुरिखाल से बिंदल गाँव के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में कहीं भी सवर्णों के गाँव नहीं पड़ते थे।

कुरिखाल के कोली शिल्पकार भूमि हिस्सेदार होने के कारण अन्य शिल्पकारों की तुलना में संपन्न थे। दूसरी ओर उन्नी व्यवसाय के कुशल शिल्पी के रूप में इनके कुटीर उद्योग भी समृद्ध थे। इस स्थिति का लाभ उठाकर जातिवाद को चुनौती देने के उद्देश्य से आर्य समाजी नेताओं के संरक्षण में डोला-पालकी बारात निकाली गई। किन्तु एक घटना के अनुसार दुगड्डा के निकट चर गाँव के सम्पन्न मुस्लिम परिवार के हैदर नामक युवक के नेतृत्व में हिन्दू सवर्णों द्वारा जुड़ा स्थान पर शिल्पकारों की बारात रोकी गई। तत्पश्चात् डोला-पालकी तोड़कर बारातियों के साथ मार-पीट की गयी। प्रशासन के हस्तक्षेप किये जाने के उपरान्त भी चार दिन तक बारात मार्ग में ही रुकी रही। ऐसी अनेक घटनाएं उस काल में हुईं। आर्य समाज के प्रभाव में आकर जब-जब दलितों ने डोला-पालकी में नवविवाहितों को बैठाने का प्रयास किया तब-तब उनके साथ मारपीट और लूटपाट की गयी। ऐसा व्यवहार दलितों की सैकड़ों बारातों के साथ हुआ। भारती जी न केवल संघर्ष के मोर्चे पर खड़े हुए बल्कि अदालतों में भी वाद दायर किये।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा दलित शिल्पकारों के हक में फैसला दिया गया। लेकिन सवर्णों का अत्याचार रुका नहीं। जयानंद भारतीय ने सत्याग्रह समिति बना कर इन अत्याचारों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखी। देश के बड़े नेताओं गोविन्द बल्लभ पन्त, जवाहर लाल नेहरु और महात्मा गांधी को भी उन्होंने इन अत्याचारों से अवगत कराया। गांधी जी को पत्र लिख कर, उन्होंने आग्रह किया कि गढ़वाल में शिल्पकारों की बारातों पर अत्याचार बंद होने तक वे व्यक्तिगत सत्याग्रह पर रोक लगा दें। गांधी जी ने भारतीय जी के पत्र को गंभीरता पूर्वक लिया और गढ़वाल में हरिजनों के उत्पीड़न बंद होने तक व्यक्तिगत सत्याग्रह पर रोक लगा दी। अखिल राष्ट्रीय स्तर पर डोला-पालकी के लिए यह संघर्ष किया गया।

अंत में अनेक प्रयासों जनजागरण के पश्चात् शिल्पकारों को अपना हक आर्यसमाज ने दिलवाया। डोला-पालकी आंदोलन लगभग 20 वर्ष तक चला। इस आंदोलन के प्राण जयानंद भारती थे। एक निम्न शिल्पकार परिवार में जन्म लेकर जयानंद भारती ने स्वामी दयानंद के समानता के सन्देश को जनमानस तक पहुँचाने के लिए जो संघर्ष किया। यह अपने आप में एक कीर्तिमान है।

आज हमारे देश की दलित राजनीति में जयानंद भारती और आर्यसमाज के दलितोद्धार के कार्य को पुन: स्मरण तक नहीं किया जाता। केवल डॉ. अम्बेडकर और ज्योतिबा पहले के प्रयासों को स्मरण किया जाता है। कारण वोट बैंक की राजनीति है। आइये हम उन महापुरुषों के योगदान से समाज को अवगत करवायें।

बोध कथा

समृद्धि का मूल मन्त्र - एकता और पुरुषार्थ

एक व्यक्ति था बहुत निर्धन। परिवार बहुत बड़ा था। खाने को कुछ नहीं। दशा बहुत खराब हुई तो परिवार को लेकर ग्राम से चल पड़ा कि कहीं दूसरे नगर में जाएँ। परिश्रम करके पेट पालेंगे। ग्राम से चले। चलते गये। रात्रि हुई तो एक वृक्ष के नीचे उन्होंने डेरा डाल दिया। पिता ने अपने बेटे से कहा-'बेटा! जाओ, पास के वन से कुछ लकड़ियाँ ले आओ ताकि आग तो जलाएँ।'

बेटा चलने लगा तो छोटा भाई बोला-'इन्हें मत भेजो, मैं जाकर लाता हूं।' उससे छोटे ने कहा-'नहीं पिताजी, मैं लाता हूँ।'

पिता ने कहा-'अच्छा बेटो, सभी कार्य करो। एक लकड़ी ले आए, दूसरा पानी, तीसरा पत्थर लाकर चूल्हा बना ले।'

सब मिलकर कार्य करने लगे। थोड़ी देर में चूल्हा बन गया। लकड़ियाँ आ गईं, आग जली पानी भी आ गया।

उस वृक्ष पर एक पक्षी रहता था। उसने जब यह सब-कुछ देखा, तो हँसकर कहा-'अरे भोले लोगो सब-कुछ तुम ले आए, परन्तु खाने को कुछ है नहीं। पकाओगे क्या? खाओगे क्या?'

समझाने के लिए यह कथा बनाई गई है, वैसे पक्षी बोलते तो हैं नहीं। बड़े लड़के ने ऊपर देखा। पक्षी को देखते हुए कहा-'तुझे खाएँगे हम। ठहर, अभी तुझे पकड़ता हूँ।'

पक्षी ने भयभीत होकर कहा-'नहीं भाई! ऐसा न करो। मुझे न खाओ। मैं तुम्हें एक स्थान दिखाता हूँ, जहाँ तुम्हें सब-कुछ मिल जायेगा।'

उन लोगों ने पक्षी के साथ थोड़ी दूर जाकर एक स्थान देखा। पक्षी ने कहा-'इस स्थान को खोदो!'

उन्होंने खोदा तो देखा-नीचे एक बहुत बड़ा कोष है; सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात, सभी-कुछ इसमें है। उस दौलत को उन्होंने निकाल लिया। अब परिश्रम की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए दूसरे दिन ग्राम में वापस आ गए। धन बहुत था। आनन्द से रहने लगे। उनके पड़ोसी ने यह दशा देखी तो पूछा-'अरे! तुम यह एक ही रात में इतने सम्पत्तिशाली कैसे हो गए?'

इन लोगों ने पड़ोसी को अपनी सारी कथा सुना दी। उस वृक्ष की बात भी बता दी, पक्षी की बात भी। पड़ोसी ने सोचा-यह तो बहुत अच्छा उपाय है। वह भी अपने सारे परिवार को लेकर ग्राम से चल पड़ा। रात्रि में उस वृक्ष के समीप पहुँचा। वहाँ डेरा डाल दिया, तो उसने अपने बड़े पुत्र से कहा-पुत्र! जाओ, थोड़ी लकड़ियाँ ले आओ।'

पुत्र ने क्रोध से कहा-'छोटे को क्यों नहीं कहते? उसकी क्या टाँगें टूट गई हैं?' पिता ने छोटे को कहा। वह बोला-'मैं तो थक गया हूँ बहुत। मुझसे चला नहीं जाता। दूसरों को क्यों नहीं कहते? इनकी टाँगों में पानी तो नहीं पड़ा?'

पिता ने दूसरों से कहा, परन्तु कोई नहीं गया। तंग आकर उसकी पत्नी ने कहा-'अच्छा, कोई नहीं जाता तो मैं ही जाती हूँ।' पति ने कहा-'अरे तू कहाँ जायेगी? बैठी रह! कहीं हाथ-पाँव तोड़कर आ जायेगी।'

कोई भी नहीं गया। लकड़ियाँ नहीं, पानी नहीं, चूल्हा नहीं, कुछ भी नहीं आया वहाँ। वृक्ष पर बैठा वही पक्षी इस तमाशे को देखता रहा। वह बोला-'अरे, तुम विचित्र लोग हो! लकड़ी नहीं,पानी नहीं, खाने को सामान नहीं, तब क्या भूखे रहोगे? खाओगे क्या?'

एक लड़के ने तुरन्त कहा-'तुझे खायेंगे।'

पक्षी ने हँसते हुए कहा-'आराम से बैठे रहो। मुझे खाने वाले चले गए। तुम आपस में ही फूटे बैठे हो। तुमसे कुछ नहीं होगा।' यह कहा और उड़के चला गया वह, कहीं दूर किसी वृक्ष पर।

यह है एकता और फूट का परिणाम! जो लोग मिलकर रहते हैं, उन्हें निश्चित रूप से सम्पत्ति मिलती है; सुख मिलता है। जो मिलकर नहीं रहते, उन्हें असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वामी दयानंद सरस्वती, भारत माता की जय, नेपाल माता की जय के उदघोष और नेपाल में आर्य समाज की नींव रखने वाले शहीद शुक्रराज शास्त्री के अमरता के नारे भी गूंजे। राष्ट्रपति महोदया के आने से पहले दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य द्वारा 'आई दयानंद की टोली' भजन प्रस्तुत किया गया। नेपाल की राष्ट्रपति श्रीमती विद्यादेवी भंडारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि वैदिक संस्कृति को आदर्श में लाने से समाज में व्याप्त कुसंस्कार, विसंगतियां, छुआछूत जातीय भेद समाप्त हो जाते हैं इन समस्याओं से निराकरण पाने के लिए वैदिक संस्कृति अति आवश्यक है। उन्होंने समाज को भौतिक व संस्कृतिक रूप में समृद्ध बनाने के लिए ***सर्वे भवन्तु सुखिनः*** तथा ***वसुधैव कुटुम्बकम्*** को व्यावहारिक रूप लाने को अतिआवश्यक बताया। पूरे सम्मलेन में वैदिक धर्म के गंभीर मुद्दों पर वैदिक धर्म परिचय यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप महिला सम्मलेन शाकाहार पर भाषण देश विदेश से पधारे बुद्धिजीवी, विद्वानों ने सरल भाषा में अपने विचार रखे। युवा वर्ग में चरित्र और सदाचार भाव की अभिवृद्धि, भौतिक, बौद्धिक विकास की संभावनाओं की खोज आदि सामयिक चिंतन द्वारा संसार में नई चेतना, उत्साह और प्रेरणा का भाव प्रवाहित करने के उद्देश्य से नेपाल में होने वाले इस महासम्मेलन में विश्व के अनेक देशों के हजारों प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

महिला सम्मलेन

मातृ शक्ति, नारी शक्ति को आगे रखते हुए अथितियों को आसन ग्रहण कराया जिसका संचालन श्रीमती राधा उप्रेती एवं श्रीमती शारदा आर्य (आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश) ने किया। मंच पर उपस्थित डॉ. अन्नपूर्णा आचार्य, आचार्य अमृता आर्य एवं अनेक माताओं, बहनों ने अपने विचार रखे। जिनको नेपाली प्रिन्ट मीडिया से लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में खूब सराहा गया। लगभग 32 देशों से आये प्रतिनिधियों में सबसे बड़ा दल मॉरीशस से लगभग 100 से ज्यादा लोग इस आयोजन का हिस्सा बनने पहुंचे। सबसे अधिक दूरी लगभग 17 हजार किलोमीटर न्यूजीलैंड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हरीश सचदेवा अपनी धर्मपत्नी उर्मिला सचदेवा के साथ पधारें। भारत का आदिवासी इलाका समझा जाने वाला राज्य (छत्तीसगढ़) यहाँ से आचार्य अंशुदेव के नेतृत्व में 10 बसें भरकर लोग सम्मलेन का हिस्सा बनने आये। पश्चिम बंगाल सभा से पंडित मधुसूदन शास्त्री के साथ भारी संख्या में लोग पधारे। हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश, बिहार इन राज्यों से भी भारी संख्या में लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर आर्य समाज के महान आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। नेपाल और भारत का सांस्कृतिक और आध्यात्मिकता का एक अनूठा संगम यहाँ देखने को मिल रहा था। हर रोज हजारों लोगों के भोजन की व्यवस्था का प्रबंध यहाँ किया गया था। आगे बढ़ने से पहले थोड़ा काठमांडू के बीचोबीच टुंडीखेल मैदान के बारे में बताते चलें। टुंडीखेल मैदान नेपाल सेना का अपना मैदान है जो कभी किसी को किसी आयोजन के लिए उपलब्ध नहीं कराते। किन्तु वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार या कहो आर्य समाज के इस महान आन्दोलन के कार्यक्रम के लिए नेपाली सेना ने इसे नि:शुल्क समर्पित कर दिया जिसमें विशाल पंडाल लगाये गये। यहाँ स्थान-स्थान पर पानी, चाय इत्यादि का प्रबंध किया गया था।

महासम्मलेन का दूसरा दिन यज्ञ एवं यज्ञोपवीत संस्कार के उपरांत विनय आर्य जी द्वारा मंच पर उपस्थित सभी आर्य महानुभावों का स्वागत किया और मंच से नेपाली गायक किशोर कुमार सेढाई द्वारा 'भज ओम भज ओम सततम्' भजन प्रस्तुत किया। यह भजन नेपाली रेडियो पर भी काफी प्रचलित है। इसके बाद संस्कृत सत्र सम्मलेन का आरम्भ किया जिसके संयोजनकर्ता श्री विनय विद्यालंकार डॉ. गौरव भट्टाराई ने किया। मंच पर उपस्थित विद्वान् एवं भारी संख्या में श्रोतागण बिना किसी कोलाहल के शांति पूर्ण अनुशासित व पूर्ण आस्था से अपने कानों में वैदिक ज्ञान का पान कर रहे थे। नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति कुल प्रसाद कोइराला ने अपने विचार रखते हुए वेद और संस्कृत को भगवान का दीपक कहा तो स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने हजारों आर्यजनों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए आह्वान किया कि संस्कृत की रक्षा करने वाले मंच पर पधारें। उन्होंने कहा कि संस्कृत की रक्षा यानि संस्कृति की

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल में ओ३म् ध्वजारोहण महाशय धर्मपाल जी ने एवं नेपाल के राष्ट्रीय ध्वज का आरोहण श्री विश्रुत आर्य ने किया।

विशाल भव्य शोभायात्रा – 'वैदिक धर्म की जय' के उद्घोष से गूंज उठा काठमाडु शहर

पृष्ठ 4 का शेष

रक्षा, वेद की रक्षा, संसार में मानवता की रक्षा का सन्देश बिना संस्कृत के नहीं दिया जा सकता। इस सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व मुम्बई पुलिस आयुक्त व वर्तमान बागपत (उत्तर प्रदेश) से भाजपा सांसद सत्यपाल सिंह, पंडित चिंतामणी जी एवं गोरखपुर से पांच बार सांसद योगी आदित्यनाथ जी थे। पंडित चिंतामणि ने अपने विचार रखते हुए कहा वेदवाणी संस्कृत साहित्य की सम्पदा है इसके बिना मानवता का विकास नहीं हो सकता लेकिन दुर्भाग्य कि लोगों ने संस्कृत जानने का प्रयास शुरू नहीं किया। उन्होंने संस्कृत को माँ का दर्जा देते हुए कहा कि माँ से प्यार करना पड़ेगा तभी उसकी ममता की बरसात होगी। मंच से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने स्वामी दयानन्द जी महाराज के लिए भारत रत्न की मांग दोहराते हुए कहा कि वेद और संस्कृत भगवान के दिए वरदान है जब खाने में शुद्धता, पीने के पानी के लिए शुद्धता की मांग उठ सकती है तो संस्कृति की शुद्धता की बात क्यों नहीं होती। आज हमें विशुद्ध संस्कृति की आवश्यकता है उन्होंने आर्य समाज को संस्कृति का रक्षक बताते हुए कहा कि भारतीय संसद स्वामी जी के चित्र बिना अधूरा है जिसको जल्द से जल्द पूर्ण करवाने की कार्यवाई की जाएगी।

योगी आदित्यनाथ जी ने इस महा सम्मेलन में पधारकर इसकी गरिमा को बढ़ाते हुए कहा कि आर्य समाज संसार का कल्याण मार्ग है जो धर्म का सबसे बड़ा रक्षक है वही आर्य है। यदि आर्य समाज और स्वामी श्रद्धानंद न होते तो शुद्धि आन्दोलन की शुरुआत न होती। यदि स्वामी दयानंद न होते तो देश आजाद न हुआ होता। सीकर राजस्थान से सांसद स्वामी सुमेधानंद जी का प्रकाश आर्य जी द्वारा ओ३म पटका पहनकर स्वागत किया गया। वैदिक विदुषी जयपुर साहित्य विभाग प्रोफेसर बहन स्नेहलता शर्मा जी ने कहा कि भाषाई और सामाजिक मर्यादा लांघने वाले समाज में अशांति फैलाकर शांति का प्रादुर्भाव पैदा कर रहे है। श्रीमती प्रेम मदान ने भी संस्कृत गीत प्रस्तुत किया।

वेद विज्ञान सम्मेलन

वेद विज्ञान सत्र मॉरीशस से आई टीम द्वारा 'मेरे मन मंदिर में भगवान तू और वेद शास्त्र का विनय प्रकाश पढो ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश' भजन से आरम्भ किया गया।

देश विदेश से पधारे अतिथियों, वैदिक विद्वानों, राजनेताओं के प्रेरक उद्बोधन एवं आशीर्वचन

पृष्ठ 5 का शेष

मॉरीशस की यदि बात करें तो इस देश की आबादी मात्र 13 लाख के लगभग है किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि यहां 700 आर्यसमाज हैं यहां से आई बहन अमृता जी द्वारा एक बड़ा सुन्दर भजन 'प्रभुगान तुम्हारा कर पाए ऐसी कृपा करो भगवान कि मेरा मन डोले न' प्रस्तुत किया गया। वेद विज्ञान सम्मलेन की अध्यक्षता स्वामी देवव्रत जी, अमेरिका से आये डॉ. सतीश प्रकाश जी ने आरम्भ करते हुए कहा मैकाले द्वारा भेजा गया मैक्समुलर जिसने वेद को असभ्य कहा लेकिन आज सभी विज्ञान से जुड़ी संस्थाओं ने माना कि वैदिक विज्ञान ही सर्वोपरि है। युवा आचार्य सनत् कुमार ने वेद को विज्ञान की जड़ बताते हुए कहा कि सभी समस्याओं का समाधान यदि कहीं है तो वेद में निहित है। उन्होंने योग दिवस की तरह ही वेद दिवस और यज्ञ दिवस मनाने का विचार सबके समक्ष रखा। भुवनेश्वर उड़ीसा से आये डॉ. पी.वी. दास ने कहा कि वेद सबके लिए है। आर्य समाज की पहचान दयानन्द और स्वामी दयानन्द की पहचान वेद है। उन्होंने वेद को संसार का एकमात्र रक्षक बताया। नेपाल से डॉ. जनार्दन धिमिरे जी ने संस्कृत भाषा पर जोर देते हुए कहा कि यदि इसी तरह अंग्रेजी का चलन चलता रहा तो एक दिन नेपाल चला जायेगा। यदि आने वाली पीढ़ी वेद नहीं पढ़ेगी तो विज्ञान कहाँ से सीखेगी? क्योंकि आग बिना कोई उर्जा उत्पन्न नहीं होती और वेद ज्ञान भी आग की तरह है। उन्होंने भारत और नेपाल में वेद प्रयोगशाला भी बनाने का आह्वान किया। जींद हरियाणा से प्रो. ओम कुमार जी ने वेद को माँ की लोरी बताते हुए कहा कि मुझे दु:ख होता है मैक्समुलर की सोच पर जिसने जब धन और पद के लिए अपनी वाणी और कलम को बेच दिया था।

सम्मलेन के आरम्भ में विनय विद्यालंकार जी ने अपने ओजस्वी भाषण से सबको आनंदित कर दिया हजारों तालियों की गड़गड़ाहट और वैदिक धर्म की जय के नाद से टुंडीखेल मैदान गूंज उठा। मंच से सांसद स्वामी सुमेधानंद जी ने ज्यादा से ज्यादा गुरुकुल की स्थापना करने का संकल्प लेने को कहा। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द की ध्वजा लेकर चलने वाला सिर्फ आर्य है। आज आर्य समाज सामाजिक उद्धार के साथ राजधर्म का निर्वहन कर रहा है। हम भारतीय संस्कृति के उद्धार के लिए सरकारी स्तर पर भी प्रयासरत हैं। इसके लिए आने वाले संसद के शीतकालीन सत्र में प्रधानमंत्री जी के सामने अपना पक्ष रखेंगे क्योंकि आज के समय में बिना दयानन्द की विचारधारा के कुछ नहीं है जिसके लिए ज्यादा से ज्यादा गुरुकुल की स्थापना की जानी चाहिए। मंच से स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने वेद को विज्ञान का मूल बताते हुए कहा कि चारों वेदों में सारा ब्रह्माण्ड है। वेद केवल कोई ग्रन्थ नहीं अपितु जीवन की वह बहती धारा है जिसके शब्द-शब्द में जीवन है अर्थ-अर्थ में जीवन निहित है। आचार्य देववृत जी ने सम्मलेन को संबोधित करते हुए कहा कि शब्द विज्ञान से वेद विज्ञान समझे जा सकते है। मनु महाराज कहते हैं जो वेद नहीं पढ़ता वह अपने परिवार के साथ शूद्र बन जाते है। आज इलेक्ट्रोनिक मीडिया से हमारे युवाओं का पतन हो रहा है वो वेद से दूर हो रहा है जबकि सभी धर्मो का मूल वेद है और जब तक आर्य समाज है वेद सुरक्षित है।

शिक्षा सम्मलेन

शिक्षा सम्मलेन का संचालन भारत के अशोक आर्य जी एवं नेपाल से महेश पोडल जी द्वारा किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. स्वागत श्रेष्ठ, डॉ. विद्यानाथ जी कोइराला, श्री एल.पी. भानु, आचार्य ज्ञानेश्वर, श्री सुभाष नोपानी, विचार टीवी से श्री धर्मेश जी आदि अतिथि उपस्थित थे। अशोक आर्य जी ने मंच का संचालन करते हुए कहा कि संसार की समस्त बुराई अशिक्षा है। आज आधुनिक शिक्षा का मूल खो गया है वह केवल जीविकोपार्जन का साधन बनकर रह गयी। जिससे असली ज्ञान की शिक्षा वैदिक शिक्षा कराह रही है। महेश पोडल जी ने नेपाली भाषा को संस्कृत की भगिनी भाषा बताते हुए कहा नेपाल की राष्ट्रीय भाषा में केवल संस्कृत की छाप दिखाई देगी। श्री सुभाष नोपानी जी ने मंच से हजारों लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि जिस भूमि में वेद गीता की रचना हुई हमारे पूर्वज सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक रूप संपन्न थे पर आज हम दण्डित क्यों? क्योंकि हमने वेद भुला दिए और आडम्बर उठा लिए। उन्होंने शिक्षा में वेदों को अनिवार्य करने की बात कही ताकि आधुनिक शिक्षा से विसंगतियां दूर की जा सकें। उन्होंने नेपाल के हिन्दू राष्ट्र होने की गरिमा का छिनना भी बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण करार देते कहा कि इसमें विदेशी मिशनरीज की साजिश रही। नोपानी जी ने आर्य समाज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का नेपाल की भूमि में इस आयोजन के प्रति आभार व्यक्त किया। एल.पी भानू जी ने शिक्षा की प्रक्रिया में आने वाली बाधा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेदों से दूर होकर आज शिक्षा आनन्द का विषय न होकर एक बोझ बन गयी। उन्होंने वैदिक विजन को शिक्षा का दर्पण बताते हुए कहा कि ***विद्या धनम सर्व धनम प्रधानम्*** सभी समाज इसी शिक्षा से महान बने हैं। आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने आधुनिक शिक्षा पर दु:ख जताते हुए सलाह दी कि आज कच्चे बच्चे बिगड़ रहे हैं। यदि माता-पिता अपने बच्चों को गुरुकुल नहीं भेज सकते तो घरों को गुरुकुल बनाएं। उन्होंने कहा आज आधुनिक शिक्षा प्रणाली अपने उद्देश्य से विमुख हो गयी। शिक्षा का अपने मूल उद्देश्य से हट जाना किसी भी समाज के पतन का पहला कारण बनता है। आज हमें वैदिक शिक्षा की जरूरत है ताकि आने वाली नस्लें राष्ट्रभक्त, सेवाभक्त समाजभक्त, और ईश्वर भक्त बने। नेपाल से श्री लक्ष्य बहादुर केसी ने अपने विचार रखते हुए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि संस्कृत के अलावा अन्य भाषाओं में नम्बर ज्यादा आने पर खुशी मनाई जाती है। संस्कृत को लोग एक विषय के तौर पर भुला बैठे हैं। जब तक आंतरिक ज्ञान नहीं होगा तब तक अन्य शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है।

समुद्घाटन समरोह

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन तीसरा दिन समुद्घाटन समारोह आर्यों द्वारा नेपाल में आर्य समाज मंदिर की घोषणा करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुरेशचंद्र अग्रवाल प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद सीकर राजस्थान, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी व माधव प्रसाद जी नेपाल आर्य समाज समेत आदि अतिथि उपस्थित थे। आरम्भ में 'ओ३म कहने से तर जायेगा और महापुरुष जन्म लेंगे सूना न जहाँ होगा' भजन का आयोजन हुआ। विनय आर्य जी ने मंच से संबोधित करते हुए कहा कि वेद का प्रचार जितनी ज्यादा भाषाओं में होगा आर्य समाज और वैदिक संस्कृति का उतना ही ज्यादा प्रचार-प्रसार होगा। उन्होंने हर्ष जताते हुए कहा कि मुझे बड़ी खुशी हुई जब यज्ञ प्रार्थना यज्ञ रूप प्रभु हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये और वेद के मंत्रों का अर्थ नेपाली भाषा में देखा। इसके बाद प्रकाश आर्य जी (मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) द्वारा अपनी सुन्दर आवाज में एक भजन, 'आनंद श्रोत बह रहा है अचरज है कि जल में रहकर मछली को प्यास है' प्रस्तुत किया। इसके बाद नेपाल की राजधानी काठमांडू में आर्य समाज मंदिर की स्थापना के लिए मॉरीशस आर्य समाज से श्री हरिदेव रामधनी जी ने सहर्ष आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हम सब स्वामी दयानन्द के उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। मॉरीशस एक बहुत छोटा सा देश है लेकिन इसके बावजूद हमने प्रत्येक गाँव में आर्य समाज हिंदी पाठशाला और एक महिला समाज का निर्माण किया है। उन्होंने नेपाल में आर्य समाज के इस महान आन्दोलन के केंद्र का स्वागत करते हुए कहा इससे पहले बीज अंकुरित होकर मुरझाये, आर्यो यथाशक्ति आगे बढ़ो। आपके दिए दान से नेपाल में वैदिक धर्म का विशाल वट वृक्ष बन जायेगा।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस कार्यक्रम में हजारों लोग उत्तर प्रदेश से पहुंचे हैं। यदि इस तरह के कार्यक्रम देश विदेश की धरती पर नहीं होंगे तो आर्य समाज स्मृति शेष बन जायेगा। आर्य समाज के सहयोग से नेपाल में पशुबलि के खिलाफ जनजागरण अभियान चलाया जायेगा। नेपाल और भारत इन दोनों देशों में हिन्दू हैं, बुराई भी सामान है तो अब समय की मांग है कि मिलकर काम करना पड़ेगा। छत्तीसगढ़ से कई सौ लोगों के साथ पहुंचे छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव जी ने हर्ष जताते हुए कहा कि आर्यो जाग जाओ अब तो हमारे आदिवासी भाई बहने भी ऋषि दयानंद के सिद्धांत को मान रहे यह बहुत बड़ा शुभ संकेत है सृष्टि की रचना में नेपाल मुख्य हिस्सा रहा। आज आर्यों का आगमन नेपाल में हुआ और अब यहाँ आर्य समाज की स्थापना होगी इससे बड़ी खुशी की बात क्या होगी। उन्होंने मंच से घोषणा की कि जल्दी ही छत्तीसगढ़ में 40 हजार दलितों की शुद्धि कर उनकी घर वापसी की जाएगी।

स्वामी सुमेधानन्द जी ने मंच से विशाल पंडाल और हजारों लोगों को सबोधित करते हुए कहा कि हमें मॉरीशस के कार्यों से प्रेरणा मिलती है। वहां की समाज एक मंत्रालय की भांति कार्य करती है। आर्य समाज का अतीत गौरवमय रहा है। आगे भविष्य भी गौरवान्वित होगा। आर्य समाज का अर्थ गतिशील होना है जो प्रकाशमान है वे ही आर्य है, आर्य समाज पत्थरों का नाम नहीं आर्य संस्कारित व्यक्तियों का नाम है। आर्य समाज की ताकत का अंदाजा नेपाल सम्मेलन देखकर लगाया जा सकता है।

बर्मा (म्यंमार) आर्य समाज से पंडित चिंतामणि जी ने सभी को नेपाल की भूमि और ऋषिभक्तों को प्रणाम करते हुए कहा कि वैदिक साहित्य सभी प्रचार-प्रसार सभी भाषाओं में होना चाहिए। श्री विनय विद्यालंकार ने कहा हम आर्य समाज को वैदिक संस्कृति का रक्षक बनायेंगे। उन्होंने कुछेक आर्य समाजों को कहा कि अब आर्य समाज सप्ताह में नहीं हर रोज खुलने चाहिए। हॉलैंड में आर्य समाज का कार्य कर रही पंडिता इंद्रा जी किन्नों ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा आप लोगों से जो प्यार और सम्मान मिला वह अतुलनीय है। पंडिता इंद्रा जी ने हॉलैंड में नये आर्य समाज बनाने की जानकारी दी। श्री सुभाष गोयल जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि माता-पिता की सेवा करो वही मंदिर है।

श्री धर्मपाल जी प्रधान (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने इस कार्य के लिए सभी के सहयोग की प्रशंसा करते हुए कहा कि महासम्मेलन में आये सभी लोगों द्वारा जो संगठन का परिचय दिया गया वहे स्तुति के लायक है। नेपाल आर्य समाज और माधव जी की शक्ति से काफी प्रेरणा मिली और एक छोटी सी कथा सुनाकर यह बताया कि बिना शक्ति के दवा बेकार है। न्यूजीलैंड से महासम्मेलन में पधारे श्री हरीश सचदेवा जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि अब समय की मांग है नये खून को आगे लाया जाये। बड़ों के सुपर विजन और युवाओं के सहयोग से ही आर्य समाज उन्नति करेगा। हरीश जी ने बताया कभी उन्होंने न्यूजीलैंड में एक छोटी सी समाज से काम शुरू किया था पर अब 30 से ज्यादा समाज हो गयी हैं। युवा आर्य समाजी श्री सुधीर मलिक जी ने अपने विचार व सुझाव रखते कहा कि अब हर एक दिन एक व्यक्ति को आर्य समाज से जोड़ें। दिल्ली से श्रीमती शारदा आर्य जी (आर्य वीरांगना दल दिल्ली) ने सभी को हृदय से धन्यवाद देते हुए कहा कि नेपाल के अन्दर आर्य वीर दल और आर्य वीरांगना दल की स्थापना करें। नेपाल से श्री विष्णुकोटि जी ने सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि आर्य समाज के इस महासम्मेलन ने पुन: नेपाल का मस्तक ऊँचा कर दिया। भारत और नेपाल के बीच सिर्फ रोटी बेटी का नाता ही नहीं बल्कि संस्कृति और सभ्यता भी साझा है। श्री इंद्र प्रकाश गाँधी ने आर्य समाज के कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि समाज लोगों को आत्मिक भोजन दे रहा है मैं अपने पुत्र और पौत्र को भी आर्य समाज को समर्पित करता हूँ। स्वामी धर्मानंद जी महाराज के एक वाक्य पर समूचा पंडाल तालियों से गूंज उठा जब उन्होंने कहा आर्य वचन, भावना, घोषणा का पक्का होता है। सम्मलेन के अंत में श्री प्रकाश आर्य ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि आर्य वह है जो गर्दिशों को भी हैरान कर दे। काठमांडू नेपाल की हृदय स्थली है नेपाल में आर्य समाज की स्थापना में लोगों द्वारा दिए दान मुक्त राशि के सहयोग के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने आर्य समाज को सभी धर्मो का सच्चा साथी बताते हुए कहा कि आर्य समाज वह संस्था व आन्दोलन है जिसे शुरूआती दिनों में एक पारसी ने जगह दी और एक मुसलमान अल्लारखा ने सहयोग दिया। आगे बढ़ते हुए उन्होंने बताया कि नेपाल में आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाएगा एवं नेपाल में गुरुकुल की स्थापना की

- शेष पृष्ठ 8 पर

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद के तत्त्वावधान में एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल वैस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली में बच्चों की विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन दिनांक 8 से 21 नवम्बर 2016 के मध्य किया जा रहा है–

1. **योगा :** 8 नवम्बर 2016 (बॉयज़) 9 नवम्बर 2016 (गर्ल्स़)
2. **क्रिकेट (बॉयज़) :** 8 नवम्बर, 9 नवम्बर, 10 नवम्बर, 11 नवम्बर (फाईनल)
3. **रस्साकसी :** 11 नवम्बर 2016
4. **बैडमिण्टन :** 15 नवम्बर (बॉयज़), 16 नवम्बर (गर्ल्स), 17 नवम्बर (फाईनल)
5. **थ्रो बॉल :** 15 नवम्बर (बॉयज़), 16 नवम्बर (गर्ल्स), 17 नवम्बर (फाईनल)
6. **एथलेटिक :** 18 नवम्बर 2016 (बॉयज़), 19 नवम्बर 2016 (गर्ल्स)
7. **फ़न रेस :** 21 नवम्बर 2016 (बॉयज़ एण्ड गर्ल्स)

समय प्रात: 8 से दोपहर 12.30 बजे तक

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें – श्री वी.के. रावत (9810253836)

– सुरेन्द्र रैली, प्रस्तोता (9810855965)

आर्य समाज गांधीधाम (गुज.) का 63वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गांधीधाम के 63वें वार्षिकोत्सव 16 से 18 दिसम्बर 2016 के अवसर पर विविध सम्मेलन, गोष्ठियां, पुरस्कार वितरण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। यह कार्यक्रम आर्य समाज गांधीधाम द्वारा संचालित ''दयानन्द आर्य वैदिक पब्लिक स्कूल'' के प्रांगण में होगा। *–गुरुदत्त शर्मा, महामंत्री*

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव समारोह

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी का सप्तम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव दिनांक 28 से 30 जनवरी 2017 को देश के लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों, साधु-सन्तों, सद्गृहस्थियों एवं श्रद्धालु आर्यजनों की उपस्थिति में सम्पन्न होगा।

–दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है। **वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। – *सम्पादक*

वैवाहिक विज्ञापन

वधू चाहिए

प्रणव कुमार, आयु 28 वर्ष, लम्बाई 5'6'', अत्रि गौत्र, इंजीनियर (कम्युनिकेशन), इरैक्शन कम्पनी स्वीडन में कार्यरत, वेतन : 3 लाख रुपये प्रतिमाह हेतु आर्य परिवार की कार्यरत/अकार्यरत वधू चाहिए। सम्पर्क करें –

आचार्य वीरेन्द्र कुमार आर्य,
आर्य समाज मन्दिर टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-110027,
मो. 07042114999, 09968294524

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें–
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ	
● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	50 रु.	30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	80 रु.	50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

41वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार, हरि नगर, नई दिल्ली के 41वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन 16 से 20 नवम्बर तक किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन, बाल/बालिका प्रतियोगिताएं तथ आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर भजन डॉ. कैलाश कर्मठ जी तथा प्रवचन डॉ. जयेन्द्र शास्त्री के होंगे। *–महेन्द्र सिंह, मत्री*

गुरुकुल होशंगाबाद का 105वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद(म.प्र.) का 105वां वार्षिकोत्सव दिनांक 9 से 11 दिसम्बर 2016 को नर्मदापुरम् होशंगाबाद में आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाएंगे।

– आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, सचिव

आर्य समाज कोसीकलां का 78वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कोसीकलां का 78वां वार्षिकोत्सव 12 से 15 अक्टूबर तक हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री शरद आर्य दीपक गिडोहवाले ने की। कार्यक्रम के पूर्व नगर शोभा यात्रा निकाली गयी। 21 कुण्डीय सुख समृद्धि महायज्ञ आचार्य देशराज शास्त्री ने सम्पन्न कराया।भजन व उपदेश श्री बालकिशन, श्री रामचन्द बेधड़क एवं श्री चतरसिंह ने प्रस्तुत किये।

–नन्द किशोर शास्त्री, मंत्री

स्व. रामचन्द्र खट्टर जी के जन्मदिवस पर

सामवेद पारायण यज्ञ

परम पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी की प्रेरणा से लाल लोकनाथ जी की आज्ञा से पूज्य पिताजी स्व. रामचन्द्र खट्टर जी के जन्मदिवस पर पारम्परिक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन 13 नवम्बर, 2016 को हमारे निवास सी-30 नीलाम्बर अपार्टमैंट रानी बाग दिल्ली 34 में डॉ. विनय विद्यालंकार जी के ब्रह्मत्व में प्रात: 5:30 बजे से 1 बजे तक किया जा रहा है। आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

– जोगेन्द्र खट्टर, 9810040982

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में

वैदिक सत्संग

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के 94वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर वैदिक सत्संग का आयोजन 8 से 13 नवम्बर, 2016 तक किया जा रहा है। इस अवसर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के प्रवचन एवं श्री भानु प्रताप शास्त्री के भजन होंगे।

समापन के अवसर पर विभिन्न विषयों पर वैदिक विद्वानों के प्रवचन होंगे।

– दयानन्द यादव, मन्त्री

MDH

हवन सामग्री

मात्र 90/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 1,
मो. 9540040339

शोक समाचार

डॉ. माधव प्रसाद उपाध्याय जी को पितृशोक

नेपाल आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं अधिकारी व अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल के संयोजक डॉ. माधव प्रसाद उपाध्याय जी के पूज्य पिता श्री शिवचन्द्र जी उपाध्याय जी का दिनांक 23 अक्तूबर, 2016 को सम्मेलन के अगले दिन ही निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उसी रात्रि काठमाडु के पशुपति क्षेत्र स्थित आर्य घाट पर वागमति नदी के किनारे किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, उपमन्त्री श्री विनय आर्य, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी एवं अन्य अनेक महानुभाव जो सम्मेलन में पहुंचे हुए थे, ने उपस्थित होकर श्रद्धांजलि दी।

श्री शिवचन्द्र जी काफी समय से बीमार चल रहे थे तथा चिकित्सालय में भर्ती थे। उन्होंने अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करके पुत्र माधव प्रसाद जी को आर्य महासम्मेलन के कार्यों में संलग्न रहने तथा सफलता के साथ पूर्ण करने के लिए कहा था। सम्मेलन की सफलता के साथ ही उन्होंने अपने प्राणों का त्याग किया।

श्री जयसिंह वर्मा को पत्नी शोक

आर्य समाज सागरपुर के पूर्व मंत्री श्री जयसिंह वर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती जी का लम्बी बीमारी के कारण दिनांक 21 अक्टूबर 2016 को निधन हो गया। अन्त्येष्टि क्रिया आचार्य नरेन्द्र शास्त्री व श्री सोमदेव शास्त्री द्वारा पूर्णरूपेण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। श्रद्धांजलि दिनांक 27 अक्टूबर 2016 को सम्पन्न हुई जिसमें स्थानीय पुरुष महिलाएं भारी संख्या में उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 31 अक्टूबर, 2016 से रविवार 6 नवम्बर, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3/4 नवम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 2 नवम्बर 2016

प्रात:कालीन योगाभ्यास एवं भव्य यज्ञशाला तथा उपस्थित यजमान

प्रतिष्ठा में,

जाएगी। संगठन में शक्ति है। हर एक वर्ष एक वार्षिक उत्सव होना चाहिए। आर्य समाज के पास समाज के लिए शुद्ध ज्ञान है जैसे गंगोत्री में पानी साफ है किन्तु बंगाल की खाड़ी में दूषित हो जाता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि कभी कोई आर्य समाजी धर्म परिवर्तन नहीं करता। आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री ने तीसरे दिन तीसरे पहर सभी आर्यजनों का इस पवित्र कार्य में सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा दानी का धन कभी घटता नहीं। साथ ही एक हुंकार भी लगाई कि उठो दयानंद के सिपाहियों समय पुकार रहा है। तन वाले तन दो, मन वाले मन दो, धन वाले धन दो। नेपाल से सांसद श्रीमती राजेश्वरी देवी भी मंचासीन रहीं।

सम्मलेन का अंतिम पहर तीन दिनों के बाद भी किसी आर्य के चेहरे पर कोई चिंता थकान नजर नहीं आ रही थी। सभी उसी उमंग के साथ वक्ताओं को सुन रहे थे। टुंडीखेल मैदान भगवा रंग से रंगा नजर आ रहा था। मैदान में उपस्थित नेपाल सेना के जवान व महानगर प्रहरी भी पूरी तल्लीनता से वैदिक संस्कृति में रचे बसे दिखाई दे रहे थे। महानगर पुलिस के डी. एस.पी श्री संतोष आचार्य व अन्य जवानों अधिकारियों को उनके द्वारा प्रदान की गयी सेवा के लिए सम्मानित किया गया। पूरी शालीनता, सद्भाव, आनंद के साथ महासम्मेलन सम्पन्न हुआ।

नेपाल में आर्यसमाज भवन हेतु भूमि क्रय एवं भवन निर्माण में सहयोग की घोषणा करने वाले महानुभावों की सूची अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

यदि आप भी नेपाल में आर्यसमाज के भवन की स्थापना के लिए सहयोग देना चाहते हैं तो अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेज दें। आप अपनी सहयोग राशि सीधे सभा के बैंक खाता सं. 09481000000276 **पंजाब एंड सिंध बैंक IFSC : PSIB0020948** में भी भी जमा करा सकते हैं। कृपया राशि जमा कराने के बाद अपनी जमा पर्ची 9540040322 पर व्हाट्सएप्प/ मैसेज अवश्य करें, ताकि रसीद भेजी जा सके।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल से सम्बन्धित कुछ विशेष चित्र, समाचार, प्रतिक्रियाएं तथा यात्रा विवरणआदि अगले अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह